राग : आत्मा से विपरीत लक्षणवाला

भाई ! त्रिलोकीनाथ तीर्थंकरदेव ऐसा कहते हैं कि मेरी ओर देखने से तुझे राग होगा। यह राग दु:खरूप है। भगवान आत्मा सत्चिदानन्द प्रभु अनाकुल आनंदस्वरूप है। स्त्री आदि के लक्ष्य से अशुभभाव होता है और भगवान की वाणी आदि के लक्ष्य से शुभभाव होता है। इन दोनों को ही समयसार गाथा -31 में इन्द्रिय कहा है और इन्द्रियों को जीतने के लिये कहा है अर्थात् इनसे हटने का उपदेश दिया है। अहो ! ऐसी हित की बात दिगम्बर जैनदर्शन के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं नहीं है।

भगवान तेरा स्वभाव तो अनाकुल आनंद है न ! उसे छोड़कर तुझे जो राग का विकल्प, देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा का विकल्प उठता है, वह आकुलता लक्षण, दु:खरूप है। अहाहा ! गजब की बात है भाई ! वस्तु का स्वरूप जैसा है, वैसा समझना पड़ेगा। सर्वज्ञ का वचन है कि शुभभाव पुद्गल से उत्पन्न हुआ भाव है, जीव द्रव्य से उत्पन्न नहीं हुआ है; पुद्गल के निमित्त से उत्पन्न हुआ है; इसलिये वह पुद्गलमय ही है। भगवान आत्मा अनाकुल आनंदस्वरूप है और पुण्य उससे विपरीत लक्षणवाला दु:खरूप भाव है, अनाकुल आनंदस्वभावी आत्मा में इसका समावेश नहीं होता। पर्याय में जो शुभराग है, पुण्यभाव है, वह दु:ख है; इसकारण निश्चयनय से उसका आत्मस्वभाव के साथ सम्बन्ध नहीं है। तथा स्वभाव का पर्याय में अनुभव होता है, उस निर्मल निर्विकारी पर्याय के साथ भी उस शुभराग का संबंध नहीं है। ह्न **प्रवचनरत्नाकर भाग -2, पृष्ठ : 202**

अवश्य लाभ लेवें

साधना चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित हो रहे डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों का समय अब प्रात: के बजाय रात्रि १०.२५ बजे हो गया है। सभी साधर्मीजन अवश्य लाभ लेवें।

साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से मोबाइल नं. 09312506419 पर सम्पर्क करें।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 23 265 अंक : 1

प्रवचनसार पद्यानुवाद

ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

ज्ञान-ज्ञेयविभाग अधिकार

इन्द्रिय बल अर आयु श्वासोच्छ्वास ये ही जीव के।
हैं प्राण इनसे लोक में सब जीव जीवे भव भ्रमे।।१४६।।
पाँच इन्द्रिय प्राण मन-वच-काय त्रय बल प्राण हैं।
आयु श्वासोच्छ्वास जिनवर कहे ये दश प्राण हैं।।१२।।•
जीव जीवे जियेगा एवं अभी तक जिया है।
इन चार प्राणों से परन्तु प्राण ये पुद्गलमयी।।१४७।।
मोहादि कर्मों से बंधा यह जीव प्राणों को धरे।
अर कर्मफल को भोगता अर कर्म का बंधन करे।।१४८।।
मोह एवं द्वेष से जो स्व-पर को बाधा करे।
पूर्वोक्त ज्ञानावरण आदि कर्म वह बंधन करे।।१४९।।
ममता न छोड़े देह विषयक जबतलक यह आतमा।
कर्ममल से मलिन हो पुन-पुन: प्राणों को धरे।।१५०।।
उपयोगमय निज आतमा का ध्यान जो धारण करे।
इन्द्रियजयी वह विरतकर्मा प्राण क्यों धारण करें।।१५१।।

• आचार्य जयसेन की टीका में प्राप्त, गाथा-१२

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पर संबंध ही दु:ख का कारण

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 29 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

न मे मृत्यु: कुतो भितिर्न मे व्याधि: कुतो व्यथा।
नाहं न बालो न वृद्धोऽहं न युवैतानि पुद्गले ।।29।।

मेरा मरण नहीं, तो डर किसका ? मुझे व्याधि नहीं, तो पीड़ा कैसी ? मैं बालक नहीं, मैं वृद्ध नहीं, मैं युवक नहीं। ये (सर्व अवस्थायें) पुद्गल की हैं।

(गतांक से आगे...)

अब यहाँ शिष्य प्रश्न करता है कि हे भगवन् ! जीव का शरीरादि के साथ निमित्त-नैमित्तिक संबंध है, यह बात तो स्पष्ट हुई; किन्तु शरीर के संयोग से ही जीव को मरण-रोगादि होते है, अत: हमारे इन मरण-रोगादि विकारों को नष्ट करने का क्या उपाय है ?

उक्त शंका का समाधान करते हुए आचार्य पूज्यपादस्वामी 29 वें श्लोक में कहते हैं कि भाई ! जन्म-मरण-रोग आदि पुद्गल के होते हैं। बाल-युवा-वृद्धादि अवस्थाऐं भी पुद्गल के ही होती है। भगवान आत्मा तो इन सबसे भिन्न शुद्ध, ज्ञानानन्दस्वरूप पवित्र आत्मा है।

एक भजन में कहा है '**अब हम अमर भये ना मरेंगे, तन कारण मिथ्यात्व दियो तज, क्यों कर देह धरेंगे ? अब हम...**' आत्मा तो अजर-अमर है, लेकिन लोग शरीर के वियोग को ही अपना मरण मानते हैं, यह मिथ्यात्व है; अत: इस मान्यता को छोड़कर **मैं अमरतत्त्व हूँ** ह्न ऐसा निर्धार कर !

अज्ञानी जीव शरीर के नाश से अपना नाश, शरीर के जन्म से अपना जन्म और शरीर में उत्पन्न रोगादि से अपने को रोगी मानता है ह्न यही अज्ञान है, दु:ख है, संसार है। मैं शरीरादि से भिन्न, जन्म-मरण-रोगादि से भी भिन्न; अजर-अमर तत्त्व हूँ ह्न ऐसी यथार्थ श्रद्धा से मिथ्यादर्शन और संसार छूटने लगता है।

पाँच इन्द्रिय, मन-वचन-काय, आयुष्य और श्वासोच्छ्वास ह्न ये दश प्राण कहलाते हैं और इन दश प्राणों के उच्छेद होने का नाम मरण है। धर्मी जीव विचार करता है कि जब मुझमें ये दश प्राण हैं ही नहीं तो इनके उच्छेदस्वरूप मेरा मरण कैसे हो सकता है ? मेरे प्राण तो ज्ञान-दर्शन-आनन्दस्वरूप हैं। इनका कभी भी नाश नहीं होता; इसलिये मेरा भी कभी मरण नहीं होता। ज्ञानादि गुणों से ही मेरा जीवन चलता है, शरीर-वाणी, पुण्य-पापादि विकारों से मेरा जीवन नहीं चलता है; इसलिये शरीर-वाणी आदि का वियोग होने पर मेरा मरण भी नहीं होता।

मुझे मरण नहीं तो भय किसका ? मुझे व्याधि नहीं तो पीड़ा कैसी ? मैं तो भगवान आत्मा चैतन्यसूर्य, ज्ञानज्योति आनन्द आदि प्राणों को धारण करनेवाला हूँ। **आरोग्यं बोधिलाभं** रागरहित मैं आरोग्यधनवान वस्तु हूँ अर्थात् मैं विकार और शरीर से रहित चैतन्यरत्न हूँह्न ऐसी बोधि और उसका ज्ञान ही मेरा आरोग्यलाभ है, निरोगता है। शरीर का रोग या निरोगता आत्मा को स्पर्श भी नहीं करती है।

वाह ! आपने तो हमें अमर और निरोगी बना दिया है !

अरे भाई ! बनाया नहीं है, बस ! जैसा है वैसा बता दिया है। सूर्य का कभी मरण होता है क्या ? वह तो सदैव अमर रहता है, उसका मरण नहीं होता; उसीप्रकार आनन्दकन्द शुद्ध भगवान आत्मा कभी मरता नहीं है। शरीर और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं; जब ये दोनों क्षेत्र से भी भिन्न-भिन्न हो जाते हैं, तब उसे मरण कहते हैं और जब नवीन शरीर का संयोग होता है, तब उसे जन्म कहते हैं। इसके अतिरिक्त जन्म-मरण का और कोई अर्थ नहीं है।

मैं केवल आत्मा हूँ। न मैं बालक हूँ और न युवा-वृद्ध हूँ। शरीर की कोमल अवस्था को बालपन कहते है, शरीर की मजबूत अवस्था को युवापन कहते हैं और शरीर की निर्बल अवस्था हो जाने को वृद्धपन कहते हैं ह्न ये सब जड़-पुद्गल की अवस्थायें हैं। चैतन्यसूर्य भगवान आत्मा की बालक-युवा आदि कोई अवस्था तो है ही नहीं; अपितु बाल-युवा-वृद्धावस्था में उत्पन्न होनेवाले विकारभाव भी उसमें नहीं है। इन अवस्थाओं में होनेवाला सुख-दु:ख भी उसमें नहीं है ह्न ऐसा धर्मी जीव यथार्थ जानता है।

27 वें श्लोक में कहा था कि मैं एक, शुद्ध, निर्मम, ज्ञान-दर्शन से परिपूर्ण, ज्ञानियों के गम्य एवं कर्मोदय से रहित हूँ ह्न ऐसा जिसने अपने स्वरूप का निर्णय किया है, वह जानता है कि बाल-युवा-वृद्धावस्था मेरी नहीं है। मैं तो ज्ञानानन्द स्वभावी चैतन्यसूर्य हूँ, भूत-भविष्य और वर्तमान की समस्त पर्यायों में कायम रहनेवाला एक अनादि-अनंत तत्त्व हूँ।

मैं स्व और पर को जाननेवाला स्व-परप्रकाशक स्वभावी परमानन्द तत्त्व हूँ। मैं परद्रव्यों को मात्र जाननेवाला हूँ। **परद्रव्य मेरे और मैं उनका** ह्न ऐसे मिथ्या अभिप्राय से मैं सर्वथा रहित हूँ। जन्म-मरण से रहित शाश्वतपना मेरा स्वरूप है; इसप्रकार जिसने अंतर में पक्का निर्णय किया है, वही धर्मी है।

मैं एक, शुद्ध, ध्रुव, अजर-अमर, अनादि-अनंत एक जीववस्तु हूँ ह्न ऐसी दृष्टि रखनेवाला जीव अपने मरण या रोगादिक के भय की दृष्टि कभी नहीं रखता ।

ज्ञानी विचारता है कि मैं तो अनंत ज्ञान-दर्शन से परिपूर्ण एक हूँ। मेरा आत्मद्रव्य पर के ममत्व से पूर्णत: रहित है। शरीरादि की क्रिया से और शुभाशुभभाव की क्रिया से भी मैं पूर्णत: रहित हूँ। मैं ज्ञायक चिदानन्द प्रभु एक समय में अनंतानंत शक्तियों से भरा हुआ अखण्ड पिण्ड हूँ।

ज्ञानी जीव स्वयं विचार करता है कि मैं अनादि-अनंत अमर तत्त्व हूँ। मेरे स्वरूप में कहीं मृत्यु का स्थान नहीं है। ज्ञानी जीव ने शरीर, विकल्प, पुण्य-पाप आदि मेरे हैं ह्न इस विपरीत अभिनिवेशरूप मिथ्यात्व का त्याग किया है, फिर उसे देहादिक के प्रति ममत्व कैसे हो ? देह का जन्म तो संयोगरूप है। जीव अपने स्वरूप में देहादिक को धारण करता ही नहीं है। मैं तो शुद्ध, ज्ञानानन्दस्वरूप नित्य वस्तु हूँ ह्न ऐसी श्रद्धापूर्वक ज्ञानी का मरणभय छूट जाता है। **(क्रमश:)**

यदि जाँचना है तो अपने को जाँचो, यदि परखना है तो अपने को परखो, पर को क्यों परखते हो ? सब दूसरों को ही परखना चाहते हैं, दूसरों को ही जानना चाहते हैं। आत्मा का स्वभाव स्व-पर प्रकाशक है। 'स्व' को पहले जानो, फिर बाद में 'पर' का ज्ञान भी हो जायेगा।

– तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ, पृष्ठ-60

कारणशुद्ध और कार्य शुद्धजीव

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की नौ वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्म-रसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा य काल आयासं ।
तच्चत्था इदि भणिदा णाणागुणपज्जएहिं संजुत्ता ।।9।।

विविध गुण पर्यायों से युक्त जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ह्न ये तत्त्वार्थ कहे हैं।

(गतांक से आगे ...)

जिसके केवलज्ञानादि शुद्धकार्य प्रकट हो गया है, उसे कार्यशुद्धजीव कहते हैं। अशरीरी परम आनंदमयदशा की प्रकटतावाले सिद्ध भगवान कार्यशुद्धजीव हैं। अशरीरी सिद्धत्व अनादि-अनंत नहीं है, वह तो नवीन प्रकट होता है अर्थात् वह कार्य है। आत्मा अनादि-अनंत है; परन्तु उसकी सिद्धदशा नई प्रकट होती है; अत: वह व्यवहार है। पहले वह दशा नहीं थी और अब नई प्रकट हुई ह्न ऐसा भेद पड़ा; इसलिये वह **व्यवहार** है। वह शुद्धदशा है; इसलिये उसे **शुद्ध** कहा तथा वह अपनी पर्याय का भाव है; इसलिये उसे **सद्भूत** कहा ह्न इसप्रकार शुद्धसद्भूत व्यवहार है। उस शुद्धसद्भूत व्यवहार से सिद्ध भगवान का जीव कार्यशुद्धजीव है। कार्यशुद्धजीव अनादि-अनंत नहीं है; क्योंकि वह दशा नई प्रकट हुई है। वह दशा शुद्धसद्भूतव्यवहारनय का विषय है।

यहाँ कार्यशुद्धजीव को शुद्धसद्भूतव्यवहार इसलिये कहा कि वह सादि-अनंत पर्याय है; अनादि-अनंत नहीं। इसको ऐसा मत समझना कि कारणशुद्धजीव और कार्यशुद्धजीव के दो भेद पड़ जाने से उसे व्यवहार कहा गया है; क्योंकि कारणशुद्धजीव तो निश्चयनय का ही विषय है और कार्यशुद्धजीव नवीन कार्य प्रकट होने से व्यवहार है।

कार्यशुद्धजीव अर्थात् सिद्ध भगवान। यह कार्य पहले नहीं था; अपितु नया प्रकट हुआ है। यह सिद्धदशारूप कार्य आत्मा के शुद्ध स्वभाव के अवलम्बन से प्रकट हुआ है ह्न इस बात को पहिचाने बिना यह जीव अनादि से शरीरादिरूप दश प्राणों को अपना मानकर संसार में भटक रहा है। इसप्रकार वह शरीरादि दश प्राणों से जीता है ह्न ऐसा उपचार से कहा जाता है।

यहाँ केवलज्ञानादि को शुद्धगुण कहा है। वास्तव में तो केवलज्ञान पर्याय है, गुण नहीं; किन्तु वह पर्याय निर्मल होकर गुण में अभेद हो गई है; इसलिये उसे शुद्ध गुण कह दिया गया है ह्न ऐसा शुद्ध गुण जिसे प्रकट हुआ है, उसे कार्यशुद्धजीव कहते हैं।

यह तो साध्यदशावाले जीव की बात हुई। अब साधकदशावाले जीव की बात करते हैं। अशुद्धसद्भूतव्यवहार से मतिज्ञानादि विभावगुणों का आधार होने से अशुद्धजीव है।

जिसको आत्मा का भान हुआ है; किन्तु अभी केवलज्ञान प्रकट नहीं हुआ अर्थात् मतिश्रुतज्ञान ही वर्त रहे हैं, उसके मतिश्रुत ज्ञान को भी यहाँ विभाव गुण कहा है। यहाँ अर्थपर्याय को गुण कहा है। सम्यक् मतिश्रुत ज्ञान भी अभी परिपूर्ण नहीं है, इस अपेक्षा से उसे अशुद्ध कहा है; किन्तु फिर भी वह अपनी पर्याय का भाव है, इसलिये सद्भूत है, भेद है इसलिये व्यवहार है। इसभाँति अशुद्धसद्भूत व्यवहार नय से आत्मा मतिज्ञानादि विभावगुणों का आधार होने से अशुद्धजीव है।

आत्मा के भानसहित अवधि-मन:पर्यय ज्ञान प्रकट होना भी विभावगुण है। ऐसे विभाव गुण को जो धारण करता है, उसे अशुद्धजीव कहते हैं। यहाँ साधकजीव को भी अशुद्धजीव कहा है। वास्तव में अशुद्ध तो पर्याय है; किन्तु वह पर्याय जीव की है; अत: जीव को भी अशुद्धजीव कहा गया है। अज्ञानीजीव भी अशुद्धजीव में ही आ जाते हैं।

ज्ञानी को शुद्ध चैतन्यस्वभाव का भान है, उसके आश्रय से जितनी शुद्धता प्रकट हुई है, उतना ही मोक्षमार्ग है अर्थात् जितना विभाव है, वह मोक्षमार्ग नहीं है। अभी ज्ञानादि अधूरे हैं, वे विभाव हैं। विभावज्ञान वर्तरहे होने से अभी जिसे शुद्धकार्य प्रकट नहीं हुआ है ह्न ऐसे जीव को यहाँ अशुद्धजीव कहा है। जिसे पूर्णकार्य प्रकट हो गया है, वह कार्यशुद्धजीव है। जिसकी अवस्था में विभाव है और जिसे त्रिकाल स्वभाव

के ज्ञान सहित विभावदशा का ज्ञान भी है ह्न ऐसे साधक को भी यहाँ अशुद्धजीव कहते हैं। शुद्ध निश्चयनय से सहजज्ञानादि परमस्वभावगुणों का आधार होने से कारणशुद्ध जीव कहा है। पहले मात्र निश्चय कहा था, यहाँ शुद्धनिश्चय कहा है।

शरीरादि तो जड़ है, पुण्य-पाप विकार हैं, एकसमय की अवस्था भी क्षणिक है; उन सबसे पार जो टंकोत्कीर्ण शाश्वत एकरूप शुद्धस्वभाव है, उसको यहाँ कारणशुद्धजीव कहा है ह्न ऐसे जीव की श्रद्धा करने से ही सम्यक्त्व होता है। कारणशुद्धजीव ही केवलज्ञानादि कार्य प्रकट होने का आधार है। यह कारणशुद्धजीव अनादि-अनंत एकरूप है और शुद्धनिश्चयनय का विषय है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग तथा मोक्षदशा किसके आधार से प्रकट होते हैं ?

उत्तर : परमस्वभाव गुणों का आधार जो कारणशुद्धजीव है, उसी के आधार से सम्यग्दर्शन और केवलज्ञानादि प्रकट होते हैं।

जैसे अग्नि प्रकट होने की शक्ति दियासलाई की तीली में नहीं है; अपितु उसके अग्रभाग की टोपी में है, वैसे ही केवलज्ञान ज्योति प्रकट होने की शक्ति शरीरादि में या पुण्य-पाप में नहीं है; किन्तु ध्रुव चैतन्य बिम्ब कारणपरमात्मा शुद्धजीव में है। उसमें अनंत केवलज्ञान पर्याय प्रकट होने की शक्ति है, उसकी प्रतीति करना ही सम्यग्दर्शन है। आत्मा में शुद्धकार्य प्रकट होने का कारण ध्रुव चिदानन्दशक्ति है, वह कारणशुद्धजीव है। उसकी प्रतीति बिना कभी धर्म नहीं होता ।

शक्तिरूप में जो त्रिकाल पूर्णस्वभाव है, वह कारणशुद्धजीव है, उसकी श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता के बल से जिसे केवलज्ञानादि प्रकट हुआ है, वह कार्यशुद्धजीव है। कारणशुद्धजीव की श्रद्धा-ज्ञान करके जिनको अभी साधकदशा वर्तरही है; किन्तु पूर्णदशा की प्राप्ति नहीं हुई, उनको अशुद्धजीव कहते हैं। जड़प्राणों से जो जीता है, उसे जीव कहना तो उपचार का कथन है।

शुद्धनिश्चय से आत्मा त्रिकाल एकरूप स्वाभाविक गुणों का आधार है ह्न ऐसा आत्मा कारणशुद्धजीव है। अपूर्ण और पूर्णदशारूप भेद कारणशुद्धजीव में नहीं है; क्योंकि वह तो त्रिकाल एकरूप है।

जिसप्रकार केवलज्ञानादि पर्याय को शुद्धगुण कहा तथा मतिज्ञानादि पर्याय को

विभावगुण कहा, उसीप्रकार यहाँ परमस्वभावगुण शब्द का प्रयोग सहज पर्याय के लिये किया गया है ह्न ऐसा समझना चाहिये।

कारणशुद्धजीव त्रिकाल है, उसके आधार से जो केवलज्ञानदशा प्रकट हुई, वह कार्यशुद्धजीव है। जिसको अभी पूर्णदशा प्रकट नहीं हुई; किन्तु कारण शुद्धजीव की प्रतीति है और अभी मतिज्ञानादि विभावदशा वर्त रही है, उसे अशुद्धजीव कहा गया है। उक्त तीन प्रकार के जीवों में से कारणशुद्धजीव की प्रतीति करना निश्चय सम्यग्दर्शन है।

सिद्धपर्याय प्रकट होना कार्य है; किन्तु यह कार्य कहाँ से प्रकट हुआ ? प्रत्येक आत्मा सहज स्वभाव शक्ति का भण्डार कारणशुद्धजीव है। वही अनंत सिद्ध पर्यायों के प्रकट होने का कारण है। उसकी श्रद्धा-ज्ञान-रमणता ही मोक्षमार्ग है।

प्रत्येक द्रव्य विविध गुणपर्यायों सहित है ह्न ऐसा मूल सूत्र में कहा है। उसमें से मुनिराज ने यह अद्भुत टीका की है। जीव की छह बोलों से पहिचान कराई है। वे छह बोल निम्नप्रकार है ह्न

(1) संयोगी दश प्राणों से टिका रहे, वह जीव ह्न ऐसा कहना उपचार है।

(2) निश्चय से जो पर से नहीं; अपने चैतन्यप्राणों से टिका है, वह जीव है।

(3) द्रव्यप्राणों से टिका है, वह जीव है, यह संयोग का कथन है; इसलिये व्यवहार है।

(4) केवलज्ञानरूप वर्तमान शुद्धकार्य प्रकट हुआ, उसका आधार जीव है; इसलिये कार्यशुद्धजीव है।

(5) कारणशुद्धजीव त्रिकालशक्तिरूप है, उसकी श्रद्धा व ज्ञान प्रकट हुआ है और अभी साधकदशा वर्त रही है ह्न ऐसे जीव को यहाँ अशुद्धजीव कहा है। शुद्धकारणजीव की प्रतीति तो हुई है; किन्तु अभी वैसी शुद्धदशा प्रकट नहीं हुई है, यह दशा अधूरी है। अधूरी अर्थात् अपूर्ण पर्याय उपादेय नहीं है। इसलिये उसकी गणना अशुद्धजीव में ही की है।

(6) उस कार्य के प्रकट होने का कारण जो त्रिकाल शुद्ध सहज ज्ञानादि परमस्वभाव गुणों का आधार है, वह कारणशुद्धजीव है।

इस भाँति छह प्रकार से जीव का वर्णन किया। **(क्रमशः)**

शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है। उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रस्तुत हैं।

(गतांक से आगे .....)

मैं आत्मा हूँ, एक ज्ञानानन्दस्वरूप हूँ - ऐसी दृष्टि होने पर शरीर-वाणी व राग की क्रिया अपनी भासित नहीं होती। ज्ञान पर्याय राग से विमुख होकर जब स्वभाव सन्मुख होती है, तब ज्ञानी को अपना अस्तित्व पूर्णरूप से अनुभव में आता है। फिर उसको शरीर-वाणी की क्रिया और व्यवहार के विकल्पों का कर्त्तापना भासित नहीं होता। देखो ! यह है धर्म और धर्म की अन्तर्दशा।

अहाहा ! ज्ञानानन्दस्वभाव से भरपूर भगवान आत्मा पूर्ण विज्ञानघन प्रभु है। उसका अनुसरण करके जो अनुभव हुआ वह अनुभव कैसा है ? तो कहते हैं कि ह्न

अनुभव चिन्तामणि रतन, अनुभव है रसकूप।
अनुभव मारग मोक्ष को, अनुभव मोक्ष सरूप।।

अरे भाई ! मैं एक हूँ, शुद्ध हूँ ह्न ऐसा विकल्प भी जहाँ नहीं है, वहाँ शब्दों की रचना मैंने की, यह क्रिया मेरी है और मैं इसका कर्त्ता हूँ ह्न ऐसा स्थूल विकल्प होना कैसे संभव है ? अतः यहाँ कहते हैं कि मैंने भाषण दिया या उपदेश दिया ह्न ऐसा मानना मिथ्या अभिमान है।

भाई ! उपदेश की भाषा का कर्त्ता कौन ? क्या उस भाषा का कर्त्ता आत्मा है ? नहीं। आत्मा तो जड़ भाषा का कर्त्ता है ही नहीं। भगवान की जो दिव्यध्वनि खिरती है, उस दिव्यध्वनि के कर्त्ता भी भगवान नहीं है। दिव्यध्वनि स्वयं से प्रामाणिक है। भगवान से वाणी की प्रामाणिकता कहना तो व्यवहार है।

आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि यह व्याख्या मैंने की है, मुझसे हुई है ह्न ऐसा नहीं है। मैं तो आत्मा हूँ स्वरूप गुप्त हूँ। भाषा की क्रिया मेरी नहीं है। शब्दों को मैंने गूंथा भी नहीं है।

यहाँ दूसरी बात यह है कि सत्य उसे कहते हैं, जिसमें दूसरे नय की अपेक्षा हो अर्थात् जो सापेक्ष है। सापेक्षता का अर्थ है पर्याय, भेद एवं राग का लक्ष्य छोड़ना; पर उनकी अपेक्षा रखना। यही इसकी सापेक्षता है। जैसे स्वभावसन्मुख होने पर निश्चयनय प्रकट हुआ तो निश्चयनय को दूसरे नय की अपेक्षा होना चाहिये कि नहीं ? हाँ; पर की, राग की एवं भेद की अपेक्षा ही दूसरे नय की अपेक्षा है। यह सुनय की व्याख्या है। कुनय में दूसरे धर्म की विस्तृत अपेक्षा नहीं होती।

नियमसार की दूसरी गाथा में शुद्ध रत्नत्रयात्मक मार्ग परम निरपेक्ष होने से मोक्ष का उपाय कहा है। देखो ! निश्चय मोक्षमार्ग परमनिरपेक्ष है, उसमें व्यवहार का लक्ष नहीं। व्यवहार की उसमें अपेक्षा भी नहीं है; इसप्रकार निश्चयनय को व्यवहार की अपेक्षा नहीं है। भाई ! ऐसा अन्तर का मार्ग अनंतकाल में भी इस अज्ञानी ने नहीं समझा है। यह तो बाह्य में क्रियाकाण्ड करके ही भाव मरण करता रहा है, इसने कभी अन्तरआत्मा को लक्ष्य में नहीं लिया। अरे ! जो उपेक्षा योग्य है, उसकी तो अपेक्षा की और जिसकी अपेक्षा करनी थी, उसकी उपेक्षा की। यही अनर्थ अब तक हुआ है।

पूर्वोक्त प्रकार से ज्ञानदशा में पर की क्रिया अपनी भासित न होने से इस समयसार की व्याख्या करने की क्रिया भी मेरी नहीं है, शब्दों की है ह्न इस अर्थ का अथवा समयसार की व्याख्या करने के अभिमानरूप कषाय के त्याग का सूचक श्लोक अब कहते हैं ह्न

(उपजाति)

स्वशक्तिसंसूचितवस्तुतत्त्वैर्व्याख्या कृतेयं समयस्य शब्दैः।
स्वरूपगुप्तस्य न किंचिदस्ति कर्तव्यमेवामृतचंद्रसूरेः ।।२७८।।

(हरिगीत)

जो शब्द अपनी शक्ति से ही तत्त्व प्रतिपादन करें।
त्यों समय की यह व्याख्या भी उन्हीं शब्दों ने करी।।

निजरूप में ही गुप्त अमृतचन्द्र श्री आचार्य का।
इस आत्मख्याति में अरे कुछ भी नहीं कर्तृत्व है।।

जिनने अपनी शक्ति से वस्तुतत्त्व (यथार्थस्वरूप) को भली भाँति कहा है ह्न ऐसे शब्दों ने इस समय की व्याख्या (आत्मवस्तु का व्याख्यान अथवा समयप्राभृत शास्त्र की टीका) की है। स्वरूपगुप्त (अमूर्तिक ज्ञानमात्र स्वरूपगुप्त) अमृतचन्द्रसूरी का इसमें कुछ भी कर्तृत्व नहीं है।

शब्द तो पुद्गल हैं वे पुरुष के निमित्त से वर्ण-पद-वाक्यरूप से परिणमित होते हैं। इसलिये उनमें वस्तुस्वरूप को कहने की शक्ति स्वयमेव है; क्योंकि शब्द का और अर्थ का वाच्य-वाचक सम्बन्ध है। इसप्रकार द्रव्य-श्रुत की रचना शब्दों ने की ह्न यह बात यथार्थ है। आत्मा तो अमूर्तिक है, ज्ञानस्वरूप है; इसलिये वह मूर्तिक पुद्गल की रचना कैसे कर सकता है; अत: आचार्यदेव ने कहा है कि इस समय प्राभृत की टीका शब्दों ने की है। मैं तो स्वरूप में लीन हूँ। उसमें (टीका करने में) मेरा कोई कर्तव्य (कार्य) नहीं है ह्न यह कथन आचार्यदेव की निरभिमानता को भी सूचित करता है। अब यदि निमित्त-नैमित्तिक व्यवहार से ऐसा कहा जाता है कि अमुक पुरुष ने यह अमुक कार्य किया है तो इस न्याय से आत्मख्याति नामक टीका भी अमृतचन्द्र आचार्य कृत ही है। इसलिये पढ़ने-सुननेवालों को उनका उपकार मानना भी युक्त है; क्योंकि इसके पढ़ने-सुनने से पारमार्थिक आत्मा का स्वरूप ज्ञात होता है। उसका श्रद्धान तथा आचरण होता है, मिथ्याज्ञान-श्रद्धान तथा आचरण दूर होता है और परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मुमुक्षुओं को इसका निरन्तर अभ्यास करना चाहिये। **(क्रमश:)**

यदि जीवन की संध्या तक भगवान आत्मा नहीं मिला तो चार गति और चौरासी लाख योनियों के घने अंधकार में अनंतकाल तक भटकना होगा। अनंत दु:ख भोगने होंगे। यदि हमें इसकी कल्पना होती तो हम यह बहुमूल्य मानव जीवन यों ही विषय-कषाय में बर्बाद नहीं कर रहे होते।

ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ-159

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : हम प्रात: से सायंकाल तक सारे दिन पर का कार्य करते हैं और आप कहते हो **नहीं करना** ह्न ऐसा क्यों ?

उत्तर : पर का न करना ह्न ऐसा नहीं, परन्तु पर का कार्य कर सकते हो कि नहीं ? न करने में तो ह्न 'पर का कर सकते हैं, किन्तु करेंगे नहीं'ह्न ऐसा अर्थ निकलता है; परन्तु यहाँ तो आत्मा शरीरादि परद्रव्यों का कार्य किंचित् मात्र भी नहीं कर सकता। पर के करने की आत्मा में शक्ति ही नहीं है।

' मैं सारे दिन पर का कार्य करता हूँ ' ह्न ऐसा मानना ही मिथ्यात्व नामक पाप है, एक वस्तु अन्य वस्तु के बाहर ही लोटती है और अन्य वस्तु से बाहर लोटती वस्तु अन्य का क्या करे ? पानी से बाहर लोटती अग्नि पानी को स्पर्शे बिना गर्म किसप्रकार कर सकती है ?

शाक से बाहर लौटता चाकू शाक के खण्ड कैसे कर सकता है ? शाक के टुकडे की पर्याय वस्तु से स्वयं से ही स्वयं होती है, उससे बाहर लौटती वस्तु उसे छूती ही नहीं, तो उसका क्या करे ? समयसार गाथा-3 में कहा है कि प्रत्येक वस्तु अपने गुण-पर्याय को स्पर्शती है, चुम्बती है; किन्तु अन्य वस्तुओं को स्पर्श ही नहीं करती तो उसका करे ही क्या ? मात्र कर्त्तापने का अभिमान अज्ञानी करता है, प्रत्येक वस्तु स्वयं अपने से ही स्वतंत्रतया परिणमन करती है ह्न ऐसा सर्वज्ञ भगवान ने दिव्यध्वनि में कहा है, तथापि किसी एक द्रव्य को मैं पलट सकता हूँ, उसका कुछ कर सकता हूँ ह्न ऐसी मान्यता में अनंत पदार्थों को भी मैं पलट सकता हूँ ह्न ऐसी अनंत कर्तृत्वबुद्धि होने से वह मोटा मिथ्यात्व है।

प्रश्न : जीव निश्चय से तो पर का कुछ नहीं करता; किन्तु व्यवहार से तो करता है ह्न यह अनेकान्त तो मानना चाहिये न ?

उत्तर: यह मान्यता खोटी है - ऐसा माननेवाले को निश्चय और व्यवहार का ज्ञान ही नहीं है। निश्चय या व्यवहार, किसी भी नय से ह्न आत्मा पर का कुछ भी नहीं कर सकता। पर की क्रिया स्वतंत्रपने होती है ह्न उसका ज्ञान करना और उस समय के निमित्त का ज्ञान कराने के लिये 'इसने यह किया'ह्न ऐसा उपचार से मात्र कहना व्यवहार है। जीव व्यवहार से पर का कर सकता है ह्न ऐसा मानना व्यवहारनय नहीं, मिथ्यात्व है।

विदर्भ के 28 तथा कम्पिलजी व शौरिपुर के 22 स्थानों पर

सामूहिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन नागपुर के अन्तर्गत नवनिर्मित महा.प्रान्त तत्त्वप्रचार समिति के तत्त्वावधान में नागपुर के समीपवर्ती विदर्भ के 28 स्थानों पर सामूहिक शिक्षण-शिविर 11 से 19 जून, 05 तक आयोजित किया गया, जिसमें 55 विद्वानों के सानिध्य में लगभग 20,000 साधर्मियों एवं 2500 विद्यार्थियों ने पूजन प्रशिक्षण, प्रवचन, बालकक्षा, भक्ति आदि कार्यक्रमों का लाभ लिया।

शिविर के माध्यम से **नागपुर इतवारी** में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुरकलाँ, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित साकेत जैन केसली, पण्डित प्रतीक जैन अशोकनगर, **अकोला** में पण्डित कोमलचंदजी जैन टड़ा, पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर, पण्डित धवलजी गाँधी नातेपुते, पण्डित संयमजी नागपुर, पण्डित सौधर्मजी लुहाड़िया अलीगढ, पण्डित ऋषभजी सेठी कोलकाता, **मुर्तिजापुर** में पण्डित विजयजी आव्हाने, पण्डित निपुणजी टीकमगढ़, पण्डित आशुतोषजी मोदी, **चंद्रपुर** में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित सुरेशजी काले, **हिंगणघाट** में पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित सचिनजी गढी, **पुलगाँव** में पण्डित रामनरेशजी शास्त्री खडैरी, पण्डित चिरागजी पाटनी कोलकाता, **यवतमाल** में पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़, पण्डित कुणालजी जैन भिण्ड, **हिवरखेड** में पण्डित सुनीलजी बेलोकर सुलतानपुर, **बड़नेरा** में पण्डित चेतनजी शास्त्री खड़ैरी, **वरूड** में पण्डित भरतजी अलगौंडर बाहुबली, **बुटीबोरी** में पण्डित अर्पितजी बड़ामलहरा, **जामठी** में पण्डित एलमचंदजी गढखेड़ा, **भंडारा** में पण्डित अनिलजी अलमान हेरले, **ब्रह्मपुरी** में पण्डित नितिनजी खड़ैरी, **सिन्देवाही** में पण्डित शाश्वतजी जैन शहडोल, **नाचनगाँव** में पण्डित रविन्द्रजी काले, **वणी** में पण्डित अनेकांतजी शास्त्री उगार, **कलमेश्वर** में पण्डित विजयजी बोरालकर, **जरूड़** में पण्डित दीपकजी डांगे, **तारणतरण चैत्यालय नागपुर** में पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी, **शेंदुरजनाघाट** में पण्डित महावीरजी मांगुलकर, **महान** में पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले, **चांदुर रेल्वे** में पण्डित जितेन्द्रजी खड़ैरी, **रामटेक** में पण्डित अनिलजी बेलोकर, **कोंढाली** में पण्डित शीतलजी आलमान, **मोर्शी** में पण्डित अजितजी गढ़खेड़ा, **देवरी** में पण्डित देवेन्द्रजी बंड तथा **बोरगॉव मंजू** में पण्डित प्रवीणजी नाले का लाभ समाज को मिला।

दिनांक 19 जून को नागपुर में शिविर का समापन रखा, जिसकी अध्यक्षता श्री निर्मलकुमारजी जैनी ने की। समारोह में श्री सिंघई नरेशजी जैन के करकमलों से प्रत्येक स्थान के प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। संचालन पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली ने किया।

सम्पूर्ण शिविर पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित आलोकजी शास्त्री एवं पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर के सशक्त निर्देशन तथा पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली के योग्य संयोजन में सम्पन्न हुआ। आयोजन में सर्वश्री अशोकजी, आदिनाथजी नखाते, विजयजी मोदी, जयकुमारजी देवडिया, कमलाकरजी मारवडकर, केशवरावजी एवं पं. दिग्विजयजी आलमान का सहयोग मिला। **ह्न विश्वलोचनकुमार जैनी**

2. आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति फिरोजाबाद द्वारा भगवान विमलनाथ की चार कल्याणक स्थली कम्पिलजी एवं नेमिनाथ की जन्मस्थली शौरिपुर के निकटवर्ती विभिन्न स्थानों पर 5 से 13 जून, 05 तक एकसाथ शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर के माध्यम से इटावा, सिरसागंज, शिकोहाबाद, करहल, जसवंतनगर, भोगॉव, कुरावली, सकीट, अलीगंज, एटा (स्वाध्याय भवन), एटा (जैन नगर), एत्मादपुर, फरिहा, कोटला, रसूलपुर, सैमरा, हनुमानगंज (फिरोजाबाद), बरहन तथा कुर्राचित्तपुर में डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित वीरेन्द्रजी जैन बरा, पण्डित नवीनजी जैन बरा, पण्डित जितेन्द्रजी जैन सिंगोड़ी, पण्डित सचीन्द्रजी गढ़ाकोटा, पण्डित अनन्तवीरजी फिरोजाबाद, पण्डित सौरभजी गढ़ाकोटा, पण्डित संभवजी नैनधरा, पण्डित अनुरागजी फिरोजाबाद, पण्डित सचिनजी जबेरा, पण्डित धीरजजी जबेरा, पण्डित अरहंतजी फिरोजाबाद, पण्डित विनयजी बूंदी, पण्डित सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं पण्डित विपिनजी फिरोजाबाद तथा मंगलायतन से अनाक्रमजी, ज्ञायकजी, मयंकजी, अभिषेकजी एवं पुनीतजी द्वारा धर्म प्रभावना की गई।

श्रुतपंचमी के दिन प्रतियोगिता के माध्यम से लगभग 600 ग्रथों की साजसज्जा की गई।

14 जून को सेठ छिदामीलाल जैन मंदिर, फिरोजाबाद में शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य वक्ता डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज थे।

सम्पूर्ण शिविर डॉ. योगेशजी जैन एवं पण्डित नवीनजी पोद्दार के निर्देशन तथा पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी सिंघई, पण्डित अनन्तवीरजी के कुशल संयोजन में सम्पन्न हुआ। शिविर के मुख्यप्रभारी पण्डित अभिनवजी मोदी एवं पण्डित सोनूजी जैन खतौली थे। शिविर में लगभग 10 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 3 हजार रुपयों के सी.डी. कैसेट्स बिके। **ह्न नवीन पोद्दार**

जैन भूगोल शिविर सम्पन्न

देवलाली (नासिक) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट की ओर से दिनांक 2 जून से 5 जून, 2005 तक जैन भूगोल शिक्षण-शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में डॉ. उज्ज्वलाजी शहा, मुम्बई ने त्रिलोकसार के आधार से केवलीगम्य गम्भीर विषय को तत्त्वज्ञान के साथ सुमेल साधते हुये 20 प्रवचनों के माध्यम से सरल भाषा में समझाया।

वैराग्य समाचार

1. **लखनऊ निवासी** इतिहासरत्न डॉ. ज्योतिप्रसादजी के लघुभ्राता वयोवृद्ध विद्वान, शोधादर्श एवं समन्वय वाणी के प्रधान सम्पादक **श्री अजितप्रसादजी जैन** का 25 जून को देहावसान हो गया।

2. **नातेपुते (सोलापुर-महा.) निवासी** सौ. मनीषा दोशी धर्मपत्नी श्री श्रेयांसजी दोशी का 24 जून, 05 को देहावसान हो गया है। आप धार्मिक विचारवन्त एवं स्वाध्यायप्रिय महिला थी।

3. **उदयपुर (राज.) निवासी** श्रीमती पहेलीबाई धर्मपत्नी श्री कस्तूरचन्दजी सिंघवी की स्मृति में स्वस्तिक ट्रेडर्स की ओर से वीतराग-विज्ञान को 500/- रुपये प्राप्त हुए हैं।

4. **ललितपुर (उ.प्र.) निवासी** मोदी रतनचन्द जैन कल्याणपुरा वालों का दिनांक 30 जून को देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में पं. ज्ञानचन्दजी ललितपुर द्वारा 202/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो ह्न यही भावना है।

अनेक स्थानों पर शिविर एवं विधान सानन्द सम्पन्न

1. मलकापुर : यहाँ श्री प्रेमचन्दजी निरखे परिवार की ओर से दिनांक 3 से 22 जून, 05 तक श्रुतस्कंध विधान एवं तत्त्वज्ञान शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन पर कक्षा ली गई तथा पण्डित सुनीलजी 'धवल', पण्डित रीतेशजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी संघई का भी लाभ प्राप्त हुआ। विधि-विधान के कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **– विनोद निरखे**

2. बाँसबाड़ा : यहाँ श्री ज्ञायक चैरि. ट्रस्ट एवं आ.अकलंक शिक्षण संस्थान द्वारा 17 से 21 जून,05 तक प्रवेश-पात्रता शिविर व विद्यमान 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री, अलीगढ़ के दोनों समय मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पं. रीतेशजी शास्त्री, पं. मनोजजी शास्त्री एवं पं. स्वतंत्रजी शास्त्री ने विभिन्न कक्षायें ली। कार्यक्रम पं. राजकुमारजी शास्त्री एवं पं. गणतंत्रजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **ह्न महीपाल ज्ञायक**

3. इन्दौर : यहाँ साधनानगर में श्री कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के अन्तर्गत दिनांक 22 से 26 जून, 05 तक 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन खासगीवाल परिवार के सहयोग से किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर के दोनों समय मार्मिक प्रवचन हुये। आयोजन में पं.पूनमचन्दजी छाबड़ा, पं.तेजकुमारजी गंगवाल एवं पं.सुशीलजी राधौगढ़ का सहयोग मिला।

4. उज्जैन : यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, युवा फैडरेशन एवं दोशी परिवार के तत्त्वावधान में 4 से 12 जून तक सिद्धचक्र विधान एवं शिविर आयोजित हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना के प्रासंगिक व विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुए तथा पण्डित विमलचन्दजी झांझरी एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य पण्डित अजीतजी शास्त्री, अलवर ने सम्पन्न कराये। साथ ही पं. अशोकजी लुहाड़िया सहित स्थानीय विद्वानों का भी कक्षाओं में सहयोग मिला। **ह्न जम्बु जैन**

5. उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति के तत्त्वावधान में एवं श्री कन्हैयालाल दलावत परिवार तथा सूरजबाई मदनलाल जेतावत चैरि.ट्रस्ट के सहयोग से दिनांक 12 से 16 जून, 05 तक नवलब्धि विधान एवं शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रात: पण्डित संजयजी अलीगढ़ एवं रात्रि में पण्डित मनीषजी रहली के प्रवचन हुए। उदयपुर के उपनगर **सेक्टर -11 में** पं. आकाशजी शास्त्री, **प्रभातनगर में** डॉ. महावीरजी शास्त्री, **गारियावास में** पं. जिनेन्द्रजी शास्त्री, **मु. मण्डल से. 9 में** पं. संजयजी शास्त्री एवं पं.प्रक्षालजी शास्त्री, **केशवनगर में** पं. स्वतंत्रजी शास्त्री तथा **नेमिनाथ कॉलोनी में** पं.अंकितजी द्वारा प्रभावना हुई।

विधान के कार्य पं. निलयजी शास्त्री, पं.आशीषजी शास्त्री एवं पं. रत्नेशजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। शिविर के निर्देशक पं. राजकुमारजी शास्त्री थे।

6. चैतन्यधाम : यहाँ 3 से 10 जून तक श्री नाथलाल वेणीचंद शाह मुम्बई परिवार के सौजन्य से धर्मरत्न पण्डित श्री बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता अभिनन्दन स्मृति तत्त्वज्ञान प्रचार-प्रसार ट्रस्ट द्वारा श्री अमृतभाई चुन्नीलाल मेहता के निर्देशन में बाल शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में पं.बाबूभाई, पं. शैलेषभाई, पं. राजकुमारजी शास्त्री, पं. आशीषजी शास्त्री, पं. निखिलजी शास्त्री, पं.प्रयंकजी शास्त्री, पं.रत्नेशजी शास्त्री तथा विदुषी ब्र. ललिताबेन का लाभ मिला।

❊ पर्यूषण हेतु आमन्त्रण शीघ्र भेजें ❊

दिनांक 8 सितम्बर से 17 सितम्बर तक होनेवाले दशलक्षण महापर्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर से प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु आमंत्रण-पत्र 31 जुलाई, 2005 तक अवश्य ही भेज देवें; ताकि 31 जुलाई से आयोजित होनेवाले शिक्षण-शिविर में निर्णय करके निर्धारित स्थानों की सूची शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता पिन कोड सहित तथा फोन नं. एस.टी.डी. कोड सहित अवश्य लिखें। यदि मोबाइल नं. हो तो वह भी लिखें। – पर्यूषण विभाग,

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

आगामी कार्यक्रम ....

28 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

रविवार, 31 जुलाई से मंगलवार, 9 अगस्त, 05 तक

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार, 9 अगस्त, 2005 तक 28 वें बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर में अध्यात्म जगत के प्रसिद्ध प्रवक्ता बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि अनेक विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा।

शिविर पण्डित ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर के निर्देशन में सम्पन्न होगा।

इस मांगलिक प्रसंग पर आप सभी को धर्मलाभ लेने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

डॉ. भारिल्ल को विद्यावारिधि की उपाधी

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 31 जुलाई, 05 की रात्रि में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्पूर्ण जैनसमाज की ओर से भारत जैन महामण्डल, राजस्थान द्वारा **विद्यावारिधी** की उपाधि प्रदानकर सम्मानित किया जायेगा। ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल को यह उपाधि 22 जून,05 को आचार्य महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में प्रदान की जानी थी। इसी अवसर पर श्रीमती सुन्दरकुमारी गदैया को भी **समाज गौरव** की उपाधी से सम्मानित किया जायेगा।

कार्यक्रम में पधारने हेतु आप सभी को हमारा हार्दिक आमंत्रण है। **ह्न सम्पतकुमार गदैया**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2005

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 13 अगस्त 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 14 अगस्त 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 15 अगस्त 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।